# स्त्री-पुरुष के बीच अंतर क्या रासायनिक हैं?

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

यदि स्त्री-पुरुष भेद में ऑक्सीटोसीन नामक रसायन की भूमिका को स्वीकार कर लें, तो क्या यह बेहतर नहीं होगा कि पत्नी अपने पति को थोड़ा ऑक्सीटोसीन पिला दे ताकि वह सुस्ताने की बजाय रसोई में उसकी मदद करने लगे? और इस संदर्भ में मेरे जैसे लोगों के बारे में क्या कहेंगे जिन्हें आम तौर पर बच्चे अच्छे लगते हैं? क्या मेरे दिमाग में ऑक्सीटोसीन की अतिरिक्त मात्रा प्रवाहित हो रही है? और जो महिला पहलवान हमें नूरा कुश्तियों में टी.वी. पर नज़र आती हैं, उनमें क्या ऑक्सीटोसीन की कमी है?

आपको शायद 1950 के दशक की एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी फिल्म *माई फेयर लेडी* (जिसकी तर्ज़ पर 'दुल्हन वही जो पिया मन भाए' बनी थी) याद होगी। यह फिल्म दरअसल जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के एक नाटक *पिग्मेलियन* पर आधारित थी। फिल्म में होता यह है कि प्रोफेसर हेनरी हिगिन्स एक फूहड़ लड़की एलिज़ा डूलिटल को सुसंस्कृत बनाने की कोशिश करता है। ऐसा करते-करते वह उससे प्यार करने लगता है। इस प्रक्रिया में एक मौका ऐसा आता है जब वह हताश होकर कहता है, "औरतें थोड़ा आदमियों जैसी क्यों नहीं हो सकतीं?" वैसे महिलाएं इससे उल्टा भी कहती सुनी जाती हैं, "क्यों ये मर्द थोड़े औरतों जैसे नहीं बन सकते?" इसके पीछे पीड़ा यह होती है कि आम तौर पर मर्द घर पर सुस्ताते रहेंगे, रिमोट लेकर टी.वी. की चैनलें बदलते रहेंगे जबकि वे चाहें तो घर के काम में मदद कर सकते हैं। तो सवाल यह है कि वे थोड़ा औरतों के समान क्यों नहीं हो सकते?

मनोवैज्ञानिक व पारिवारिक चिकित्सक माइकेल डुरियन ने स्त्री-पुरुष भेद के एक खास पहलू पर गौर किया है। डुरियन ने हाल ही में इस विषय पर एक किताब भी लिखी है - *"व्हाट कुड ही बी थिंकिंग? हाऊ ए मैन्स माइन्ड रियली वर्क्स?"* (यानी "वह क्या सोच रहा होगा? एक मर्द का दिमाग सचमुच कैसे काम करता है?") अंग्रेज़ी दैनिक *दी हिन्दू* में इस पुस्तक का सारांश भी प्रकाशित हुआ है। डुरियन का मत है कि स्त्री-पुरुष का यह भेद मात्र सांस्कृतिक नहीं है। उनके अनुसार इस व्यवहार की जड़ें उनकी शारीरिक रचना में है। डुरियन के मुताबिक स्त्री और पुरुष के व्यवहार में अंतर का सम्बंध उनके दिमाग में पाए जाने वाले हार्मोन और पेप्टाइड्स की मात्रा में अंतर से है। डुरियन का कहना है कि यदि आप स्त्री और पुरुष के दिमागों का पी.ई.टी. स्कैन या एम.आर.ई. स्कैन करें तो दिमाग के उस भाग की गतिविधि में अंतर दिखेंगे जिसका नाम सिंगुलेट गायरस है और जिसका सम्बंध भावनाओं से है।

यह आश्चर्यजनक दावा भी किया जा रहा है कि ऑक्सीटोसीन और सिरोटोनीन नामक हार्मोन्स की मात्रा में अंतर की वजह से दिमाग में उपरोक्त भिन्नताएं नज़र आती हैं। ऐसा बताया जाता है कि ऑक्सीटोसीन का सम्बंध 'प्रायमरी बॉण्डिंग' की भावना से है जबकि सिरोटोनीन 'शांतिदायक असर' के लिए जवाबदेह है। वास्तव में एल.एस.डी. जैसे नशीले पदार्थ सिरोटोनीन के असर को समाप्त करके ही दिमाग को असामान्य रूप से सक्रिय कर देते हैं। डुरियन का कहना है कि स्त्री की अपेक्षा पुरुष के मस्तिष्क में ऑक्सीटोसीन और सिरोटोनीन कम मात्रा में बनते हैं। इसीलिए स्त्री के विपरीत पुरुष को फर्नीचर पर जमी धूल या फर्श पर पड़ा संतरे का छिलका आसानी से नहीं दिखता। इसका कारण यह है कि पुरुष का मस्तिष्क संवेदना की बारीकियों को कम देखता है। पुरुष घर के अंदर की चीज़ों के साथ कम अपनत्व रखता है जबकि कार्यस्थल की चीज़ों के साथ उसे ज़्यादा अपनापन लगता है। इसीलिए वह घरेलू

काम को लेकर उतना परेशान नहीं होता।

इसके अलावा, डुरियन के मुताबिक, पुरुष के शरीर में बनने वाला हार्मोन टेस्टोस्टेरोन उसे उकसाता है कि वह प्रतिस्पर्धा और ऊंच-नीच से भरपूर समूहों में शामिल हो और शेखी बघारे।

सवाल यह है कि यह सब कुछ क्या मात्र एक पुरुष द्वारा अपने तौर-तरीकों को जायज़ ठहराने का प्रयास है या इसका कोई जीव वैज्ञानिक आधार भी है? क्या अन्य जानवरों में भी ऐसे लिंग भेद देखने को मिलते हैं? क्या उन जन्तुओं में इन अंतरों के जैव-रासायनिक कारण समझे जा सके हैं?

हमारे सबसे नज़दीकी जानवर चिम्पैंज़ी और गोरिल्ला हैं। जहां तक मेरी जानकारी है (और गूगल सर्च के परिणाम हैं), हमारे इन करीबी रिश्तेदारों के एम.आर.आई. स्कैन या हार्मोन की मात्रा सम्बंधी आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। मगर प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक जेनफान लाविक गुडऑल की पुस्तक *'इन दी शेडो ऑफ मैन'* पढ़कर कुछ समझ मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि नर चिम्पैंज़ी ठीक पुरुषों के समान व्यवहार करते हैं (या शायद इसी बात को उल्टी तरफ से कहना ज़्यादा ठीक होगा कि पुरुष नर चिम्पैंज़ियों की तरह व्यवहार करते हैं)। दूसरी ओर, सारा घरेलू कामकाज मादा चिम्पैंज़ी ही करती हैं। इसके अलावा मादा चिम्पैंज़ियों के बीच काफी घनिष्ठता होती है और काफी दोस्ताना आदान-प्रदान भी होता है। ऐसा भावनात्मक वार्तालाप विश्राम का एक अच्छा तरीका है।

इसी संदर्भ में कुछ जानकारी एक छछूंदरनुमा जीव (वोल) के बारे में भी मिलती है। कुछ वर्ष पूर्व गुंजन सिन्हा ने पापुलर साइन्स नामक पत्रिका में एक लेख के ज़रिए इलिनॉय विश्वविद्यालय के डॉ. लॉवेल गेट्ज़ और डॉ. स्यू कार्टर के शोध कार्य का ब्यौरा दिया था। गेट्ज़ और कार्टर की रुचि वोल के एक ऐसे व्यवहार में थी जो बहुत हद तक मानव-सदृश है। वोल में भी एक ही सदस्य से जोड़ा बनाना (मोनोगैमी) और जीवनपर्यंत स्थाई जोड़ा बनाने की प्रवृत्ति दिखती है। कार्टर का विचार था कि स्तनधारियों के मस्तिष्क में ऑक्सीटोसीन की क्रिया से इसका कुछ सम्बंध होगा। यह देखा गया है कि कुछ प्रजातियों में यह हार्मोन (ऑक्सीटोसीन) नर-मादा बंधन में कुछ भूमिका निभाता है। इसके अलावा मां व उसके बच्चों के बीच बंधन में भी शायद इसकी कुछ भूमिका है। तो कार्टर के दिमाग में यह सवाल आया कि "कहीं वोल के दिमाग में उपस्थित ऑक्सीटोसीन ही तो उन्हें आजीवन जोड़ा बनाने को प्रेरित नहीं करता?"

जब कार्टर ने मादा वोल के दिमाग में ऑक्सीटोसीन

*अर्द्धनारीश्वरः कहीं हारमोन वगैरह का चक्कर तो नहीं?*

का इंजेक्शन लगाया तो वे एक बार जोड़ा बनाने के बाद अपने नर-साथी से मानो चिपक ही गईं। दूसरी ओर, जब उन्हें ऑक्सीटोसीन की क्रिया को रोकने वाले पदार्थ का इंजेक्शन लगाया गया तो उन्होंने अपने साथियों को दगा दे दिया।

इस प्रयोग के परिणामों को देखते हुए सैन फ्रांसिस्को के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की रेबेका टर्नर ने इंसानों पर प्रयोग शुरू कर दिए। उन्होंने 1999 में बताया कि ऑक्सीटोसीन का सम्बंध स्वस्थ व्यक्तिगत सम्बंधों, लगाव तथा बंधन बनाने से है। उन्होंने यह भी देखा कि शारीरिक स्पर्श और मालिश से भी शरीर में ऑक्सीटोसीन की मात्रा में वृद्धि होती है।

जैव विकास की दृष्टि से देखें तो यह समझदारी की बात लगती है कि गर्भावस्था और प्रसव के तुरन्त बाद मां का शरीर और दिमाग दोनों अपने बच्चे के पोषण के प्रति सक्रिय हों। यह भी जानी-मानी बात है कि यौन उत्तेजना और चरमोत्कर्ष के दौरान शरीर में ऑक्सीटोसीन की मात्रा बढ़ जाती है। इसी के कारण शायद वयस्कों के बीच सम्बंध मज़बूत होते हैं। तब कोई अचरज की बात नहीं है कि ऑक्सीटोसीन को स्पर्श हार्मोन भी कहते हैं।

मगर क्या माई फेयर लेडी में हेनरी हिगिन्स के सवाल का जवाब ऑक्सीटोसीन है? क्या डुरियन स्त्री-पुरुष भेद के संदर्भ में ऑक्सीटोसीन की भूमिका को ज़रूरत से ज़्यादा ही खींच रहे हैं? यदि ऑक्सीटोसीन की भूमिका को स्वीकार कर लें, तो क्या यह बेहतर नहीं होगा कि पत्नी अपने पति को थोड़ा ऑक्सीटोसीन पिला दे ताकि वह सुस्ताने की बजाय रसोई में उसकी मदद करने लगे? और इस संदर्भ में मेरे जैसे लोगों के बारे में क्या कहेंगे जिन्हें आम तौर पर बच्चे अच्छे लगते हैं? क्या मेरे दिमाग में ऑक्सीटोसीन की अतिरिक्त मात्रा प्रवाहित हो रही है? क्या इसी वजह से मैं बार-बार अपनी डाइनिंग टेबल को पोंछता रहता हूं? क्या स्त्रीवत पुरुष ऑक्सीटोसीन के नशे में हैं? और उन सारे रसोइयों के बारे में क्या कहेंगे जो सदा पुरुष ही होते हैं? और जो महिला पहलवान हमें नूरा कुश्तियों में टी.वी. पर नज़र आती हैं, उनमें क्या ऑक्सीटोसीन की कमी है?

मेरा ख्याल है कि ऑक्सीटोसीन सिद्धांत अभी अपरिपक्व स्थिति में है और इसे कई अलग-अलग परिस्थितियों में परखने की ज़रूरत है। और इन प्रयोगों में तुलना के लिए उपयुक्त इंतज़ाम भी करना होंगे। हार्मोन की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि वे शरीर में मात्र एक क्रिया सम्पन्न नहीं करवाते। कई हार्मोन्स शरीर के एक से अधिक अंगों पर असर डालते हैं या एक से अधिक जीन्स को बन्द या चालू कर देते हैं। हमें यह समझना होगा कि किसी हार्मोन का दुरुपयोग होते देर नहीं लगेगी। जैसे खुद ऑक्सीटोसीन का ही उदाहरण लीजिए। देश के कुछ भागों में ग्वाले और डेयरियां गाय का दूध बढ़ाने के लिए इसका दुरुपयोग कर रहे हैं। गाय का दूध बढ़ाने के लिए उन्हें ऑक्सीटोसीन का इंजेक्शन लगा दिया जाता है। इसके दुष्परिणाम गाय-भैंसों को भुगतने पड़ते हैं। इनमें उल्टियां, दिल की धड़कन बढ़ना, मिरगी आना और कोमा तक शामिल हैं।

यह सही है कि माइकेल डुरियन ने एक चमत्कारिक सिद्धांत पेश किया है मगर अभी इसके अनुरूप कार्यवाही का वक्त नहीं आया है। अभी तो कोई पति अपनी पत्नी के सामने इस सिद्धांत की दुहाई देकर यह भी न कहे, "मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता क्योंकि मेरी तासीर ही ऐसी है। ऑक्सीटोसीन का दोष है, मैं क्या करूं?" या दूसरी ओर, अभी वह समय भी नहीं आया है कि पत्नियां अपने-अपने पतियों की चाय में ऑक्सीटोसीन मिला दें।

*(स्रोत फीचर्स)*


# स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं